P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-7* ISSUE-5* January- 2020
E: ISSN NO.: 2349-980X **Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika**

गांधीवाद की सार्थकता-आतंकवाद के परिप्रेक्ष्य में

Significance of Gandhism – In The Perspective of Terrorism

Paper Submission: 05/01/2020, Date of Acceptance: 15/01/2020, Date of Publication: 20/01/2020

नीरजा शर्मा
एसोसिएट प्रोफेसर,
समाजशास्त्र विभाग
राजकीय
महाविद्यालय,
धौलपुर, राजस्थान
भारत

सारांश

आज सम्पूर्ण विश्व आतंकवादी कहर से ग्रसित है, आतंकवादी कौन? डरा धमकाकर या हिंसात्मक, विध्वंसात्मक तरीके से भयाक्रांत करने वाले को आतंकवादी कहा जा सकता है। वृहद हिन्दी कोष के अनुसार आतंकवाद -''राज्य या विरोधी वर्ग को दबाने के लिए भयोत्पादक उपायों का अवलम्बन''। आतंकवाद के अनेक नाम हैं - राज्य प्रायोजित, गुट प्रायोजित, आपराधिक, नाका आतंकवादी, मुद्दों से प्रेरित आतंकवाद। इन्हें हम दो भागों में बांट सकते हैं- (अ) विचारात्मक (ब) आपराधिक। आपराधिक आतंकवाद व्यवसायिक पूर्णतः आपराधिक या मादक द्रव्य से संबंधित हो सकता है। इनकी गतिविधियों में कानून व्यवस्था शांति भंग करने से लेकर राजनेताओं को मारने, हिंसात्मक तरीकों से जनता को भयभीत करने के तरीके शामिल हैं। मादक पदार्थो की लत युवा वर्ग को लगाकर फिर उसकी उपलब्धता में कटौती कर उस वर्ग से किसी भी प्रकार का आपराधिक कृत्य दवाबपूर्वक करवा लेने की क्षमता रखते हैं। नित नए हथकण्डों से ये युवा वर्ग की सोचने समझने की शक्ति पर हावी होते जा रहे हैं। इन्टरनेट के जरिए आतंकवाद फैलाने का तरीका नवीन रूप ले चुका है। आग्नेय पदार्थो बमों आदि का अनापेक्षित जगहों, खिलौने में, भीड़ वाले इलाकों में, इमारतों, रेल गाड़ियों में छिपाना, फिर उसे उड़ा देने की धमकी देना। बैंक डकैतियाँ करना या हवाई जहाजों या प्रमुख नेताओं का अपहरण कर अपनी मांगों को मनवाने के लिए दवाब डालना ये इनके हथकण्डों में शामिल है।

Today the whole world is affected by terrorist havoc, who are the terrorists? Anyone who creates terror by intimidation or by violent, destructive means can be called a terrorist. Terrorism according to the Brihat Hindi Kosh – "Reliance on intimidatory measures to suppress the state or the opposition class". Terrorism has many names - state sponsored, group sponsored, criminal, naka terrorist, issue motivated terrorism. We can divide them into two parts- (a) Thoughtful (b) Criminal. Criminal terrorism may be commercial, purely criminal or drug-related. Their activities range from disturbing law and order to killing politicians, intimidation of the public through violent means. By making the youth addicted to drugs, and then reducing their availability, they have the ability to forcefully get any kind of criminal act done by that class. With new tactics, they are dominating the thinking and understanding power of the youth. The method of spreading terrorism through internet has taken a new form. Hiding explosives, bombs, etc. in unexpected places, in toys, in crowded areas, in buildings, trains, and then threatening to blow them up. Committing bank robberies or hijacking airplanes or prominent leaders and pressurizing them to agree to their demands are included in their handcuffs

मुख्य शब्द : सम्प्रदाय, गांधीवाद, नक्सलवाद, आतंकवाद।

Keyword: Sect, Gandhism, Naxalism, Terrorism.

प्रस्तावना

भारत ने एक सम्प्रदाय विशेष की धर्मान्धता से खालिस्तानी आतंकवाद देखा है। नक्सलवाद, बोडो, लिट्टे संचालित आतंकवाद और अब लगातार चलने वाला जम्मू कश्मीर का आतंकवाद जो स्वयं की इस लड़ाई को पवित्र लड़ाई-जेहाद का नाम देते हैं। स्वयं जनरल परवेज मुशर्रफ इसके बारे में लिखते हैं - कश्मीर में जो हो रहा है वह उनकी आजादी की लड़ाई है। यह राष्ट्रवादिता का कट्टरपन नही तो और क्या है।

कारणों को ढूंढने का प्रयास करें तो आतंकवाद पनपता है शोषण, अन्याय, बेरोजगारी, भुखमरी, भ्रष्टाचार से। इन सबके अलावा न्याय मिलने में विलंब, राजनीतिज्ञों

की अपनी जरूरत और नैतिक मूल्यों में गिरावट भी कुछ कारण है। इसके अलावा राष्ट्रवाद में कट्टरपन, धार्मिक उन्माद-अन्धानुकरण भी मनुष्य को आतंकवाद की कगार पर खड़ा कर सकता है। अक्सर ऐसे में व्यक्ति अपने को, जेहादी और अपने कृत्य को ''जेहाद'' नाम दे देता है।

आतंकवाद एक राष्ट्र का नहीं विश्व के चिंतन का मुद्दा है। यह एक ऐसी समस्या है जिसका निदान, गांधीवाद के रूप में हमारे पास है। सोनिया गांधी लिखती हैं - ''भारतीय राष्ट्रवाद का ढांचा हमेशा ही श्रेष्ठ भारतीय मूल्यों पर टिका रहा है जिन्हें कुछ महान हस्तियाँ सामयिक अर्थ देती रही हैं - जिनमें महात्मा गांधी, टैगोर, नेहरू आदि शामिल हैं। प्रखर मस्तिष्क और नेक दिल राष्ट्र निर्माताओं ने हमें ऐसा राष्ट्रवाद दिया जो उदार है और भारत की विविधता से ताकत पाता है। उन्होंने हमें ऐसा राष्ट्रवाद दिया जो आत्म-विश्वास से भरपूर है''। स्वयं गांधी जी राष्ट्रवाद के कट्टरपन के विरोधी थे वे इसे हिंसा मानते थे। भारत से उनका गर्व भरा प्रेम था वे निकम्मी हिंसा के त्याग की बात करते थे, वे चाहते थे देश आत्मत्याग का मार्ग चुन ले। अहिंसा से उसकी महत्ता को उन्होंने सम्मान दिया। वे किसी भी प्रकार से संविधान की अंदर से तोड़ने के पक्षधर नहीं थे। वे जानते थे कि लोकतंत्र में स्वयं के शासन को गिरा देने की ताकत होती है। अतः किसी भी प्रकार से हिंसा के बदले चेतावनी दी जानी चाहिए कि राष्ट्र उस स्थिति को सुधार ले हिंसा उनके विचारों की विरोधी थी। अहिंसा रूपी रत्न की खोज सत्य के अन्वेषण एवं चिन्तन की अवधि में हुई थी।

एक जगह वे लिखते हैं यदि कायरता और हिंसा में से किसी एक को चुनना होगा तो मैं हिंसा को ही पसंद करूंगा दूसरे को न मारकर स्वयं करने का जो धीरतापूर्ण साहस है मैं उसी की साधना करता हूं... बाद में वे कहते हैं मैं जानता हूं- हिंसा की अपेक्षा अहिंसा कई गुनी अच्छी है। अन्याय के प्रति ''भले आदमी'' की तरह आत्मसमर्पण का नाम अहिंसा नहीं, अत्याचारी की प्रबल इच्छा के विरूद्ध अहिंसा केवल आत्मिक शक्ति से टिकी रहती है। आतंकवादी में इसी आत्मिक शक्ति की कमी है जो कभी समय में बाल्यावस्था में किसी के लिए गए कृत्य के कारण बाल मन पर पड़ी अवसाद की अवस्था को प्रश्रय देती है। जो घुटन भरे वातावरण में हिंसक होकर युवावस्था के आतंकवाद को जन्म देता है। इस घुटन से उन्हें गांधी का चिंतन बाहर निकाल सकता है।

उनका संदेश गुरू मंत्र होगा कट्टरपंथियों के लिए कि ''देश प्रेम को मैं समूची मानव जाति के साथ मिलकर देखता हूं मनुष्य होने के कारण मनुष्य को प्यार करने के कारण मैं देश प्रेमी हूं अतिवाद मेरे लिए नहीं। अपने देश की सेवा करते हुए दूसरे को नुकसान पहुंचाने की तो कल्पना भी नहीं कर सकते थे ''बाहर की स्वाधीनता को अंदर की स्वतंत्रता के नाम पर विलुप्त करना सहज होता है'' वे कहते थे ''विवके शून्यता न आने पाए''। आज के समय की शायद यही सबसे ज्वलंत मांग है। सम्प्रदाय के नाम पर या धर्म के नाम पर जो अंधानुकरण है उससे सिर्फ मानसिक शून्यता आती है और यह उन्माद कभी खत्म नहीं होगा। वे लिखते हैं ''धर्म हो या अन्य कोई विचार, मैं धर्म को लेकर कोई शोरगुल नहीं मचाना चाहता। मुझसे यह भी नहीं होगा कि पवित्र नामवाला होने के कारण मैं किसी के पाप को क्षमा कर दूं। मैं किसी को अपने साथ तब तक नहीं घसीटूंगा जब तक वह अपने ही तर्को से मेरी बात न मान ले। मैं पुराने से पुराने शास्त्र की पवित्रता को भी अस्वीकार करने तैयार हूं अगर वह मेरे तर्को से ग्रहण योग्य प्रमाणित न हो'' और यह भी कि यह अनिष्टकर है जो कभी-कभी शैतान के चाबुक से बाध्य होकर आत्मसमर्पण करने से भी अधिक अनिष्ट कर हो जाता है।

जो शैतान का गुलाम है उससे मुक्ति की आशा की जा सकती है, प्रेम के गुलाम के लिए यह आशा नहीं की जा सकती।

सम्पूर्ण विश्व आतंकवादी की अग्नि में झुलस रहा है। वह जो युगों-युगों से उग्र राष्ट्रवाद के नाम पर मानवता को ध्वस्त करने के लिए तत्पर है, उन्हें मात्र उपदेश देने से काम नहीं चलेगा। भारत का संदेश होगा आत्मत्याग। गांधीवादी चिंतन के अनुसार ''त्याग की भावना बढ़ती रहेगी उसके साथ सहने की इच्छा भी, यही सच्ची स्वाधीनता है। हमें संसार को दिखलाना है कि सत्य क्या है, यही सत्य निरस्त्रीकरण को एक शक्ति देता है। अहिंसा विश्व की सर्वाधिक गतिशील प्रक्रिया है इसमें सफलता निश्चित है।

विवेक शून्यता जो धर्म या सम्प्रदाय के नाम पर आतंक करवाती है वे उसे नष्ट करने का आग्रह करते हैं। वे चुनौती देते हैं कि ''वे साबित करें कि क्या धर्म कलह का रास्ता दिखाता है? पुनः वे कहते हैं बाइबिल, कुरआन, गीता सभी समान रूप से पवित्रता प्रेरित हैं। सभी धर्म के अनुसार ईश्वर की पूजा करें। एक धर्म का अन्य सभी धर्मो के साथ संबंध कलह का नहीं प्रेम का है।

वे लिखते हैं भगवद् गीता का मैं भक्त था, लेकिन शांतिपूर्ण प्रतिरोधी की नीति का कितना मूल्य हो सकता है यह मैं 'न्यू टैस्टामेंट' पढ़ने के बाद जान सका''। यह धारणा और सुदृढ़ हुई जब मैंने पुनः गीता पढ़ी और टॉल्सटॉय का ''ईश्वर का राज्य तुम्हारे भीतर है'' पढ़ने के बाद तो यह हमेशा के लिए बुद्धि मूल हो गई''।

किसी भी धर्म ने हिंसा को सार तत्व नहीं माना है। ईसा शांतिपूर्ण प्रतिरोध क बादशाह हैं भगवत् गीता जो शिक्षा देती है वह हिंसा नहीं प्राण-प्रण से कर्तव्य पूर्ति की शिक्षा है।'' चूंकि मनुष्य में सृष्टि करने की शक्ति नहीं है। अतः उसे ध्वंस का अधिकार भी नहीं है।''

निष्कर्ष

आज आतंकवाद सिर्फ एक राष्ट्र की समस्या नहीं बल्कि सम्पूर्ण विश्व की है। इसे सोचना होगा कि वह मानसिक अवसाद की, तनाव की, बदले की भावना की एक ऐसी अवस्था है जो तंद्रामय है। इससे मुक्त होने पर सिवाय आत्मग्लानि के कुछ नहीं हासिल होगा। इस ग्लानिमय अवस्था से मुक्त होने के लिए गांधीवादी अपनाना होगा। गांधीवाद महज एक विचारधारा नहीं, चिंतन नहीं, जीवन का एक तरीका है ष्। ूंल व िस्पमिष् और आतंकवाद एक मानसिक विकृति है। निःसंदेह जीवन के इस तरीके को अपनाकर हम घृणा से मुक्त होंगे। यह एक मानवतावादी संदेश है जो मनुष्य समाज से परिवर्तन का आग्रह करती है जो हिंसा को आत्मिक सहनशीलता और प्रेम से बदल लेना चाहती है। यह एक स्वप्न है। अहिंसक समाज का, शांत विश्व का जो कभी न करने वाली मानव प्रकृति की अच्छाइयों पर आधारित है। स्वयं रवीन्द्रनाथ टैगोर ने 1921 में जो लिखा वह आज सत्य प्रतीत होता है कि एक दिन ऐसा आएगा जब संपूर्ण रूप से निरस्त और दुर्बल मनुष्य अपनी महिमा लेकर खड़ा होगा और प्रमाणित करेगा कि विनयी लोग ही संसार के उत्तराधिकारी होंगे। यह स्वाभाविक है कि शारीरिक रूप से दुर्बल और समस्त धनसंपत्तियों से हीन होकर भी महात्मा गांधी विनम्रता और विनय की उस अजय शक्ति को प्रमाणित कर सकेंगे जो आज के निर्धन और उत्पीड़ित भारत के मानव हृदय में निहित है। मनुष्य के इतिहास के उच्च शिखर पर ले जायेगा ..... हमारा युद्ध सारी मानवता के लिए है, यह आध्यात्मिक संग्राम है अपने चारों ओर मनुष्य ने जो जाल बुन रखा है उससे हम उसका छुटकारा दिलायेंगे। राष्ट्रीय अहंकार के समस्त कारागारों से उसे बाहर निकाल पायेंगे। लेकिन हमें कसम लेनी होगी कि गांधी हमारे ''जीवन का तरीका'' होंगे जिसके मायने होंगे - शिक्षा का अभिन्न हिस्सा, सादगीपूर्ण जीवन आध्यात्मवाद और संयम का

संयोग तथा स्वयं के ऊपर कठोर अनुशासन (आत्मानुशासन) तब गांधीवाद स्वमेव आतंकवाद को समाप्त कर देगा। यह विश्वास नहीं पूर्ण सत्य है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. सिंहल, एस.सी.-समकालीन राजनैतिक मुद्दे, पेज 163
2. वही - पेज 164
3. त्रिपाठी, डॉ. एस.सी. लीगल राईटिंग, पेज 209
4. नारंग, ए.एस. - ट्रेरिज्म अग्लोबल पस्पेक्टिव, पेज 232
5. सिंहल एस.सी. - समकालीन राजनैतिक मुद्दे, पेज 164
6. इंडिया टुडे, 29 मार्च 2004, पेज 29
7. वही - पेज 37
8. रोमा रोला - महात्मा गांधी - जीवन और दर्शन, पेज 47 और 33
9. संकधर, एम.एम. - गांधी, गांधीस्म एण्ड पार्टीशन आॅफ इण्डिया, पेज 63
10. रोमा रोला - महात्मा गांधी - जीवन और दर्शन, पेज 110
11. वही - पेज 33
12. संकार, एम.एम. - गांधी, गांधीस्म एण्ड पार्टीशन आॅफ इण्डिया, पेज 48-49
13. रोमा रोला - महात्मा गांधी - जीवन और दर्शन, पेज 71
14. वही - पेज71
15. नागर, डॉ. पुरूषोत्तम - आधुनिक भारतीय सामाजिक एवं राजनीतिक चिंतन, पेज 375
16. अवस्थी, ए.पी. - भारतीय राजनीतिक चिंतन, पेज 187
17. नागर डॉ. पुरूषोत्तम - आधुनिक भारतीय सामाजिक एवं राजनैतिक चिंतन, पेज 187
18. सकधर, एम.एम. - गांधी, गांधीस्म एण्ड पार्टीशन आॅफ इण्डिया, पेज 49
19. वही - पेज 47